Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 2, February - 2025

DOIs:10.2018/SS/202502002 --:-- Research Paper / Article / Review

उदय भानु हंस का व्यक्तित्व विभास

डॉ सुमन देवी

सहायक प्रवक्ता हिंदी, राजकीय महाविद्यालय बालसमंद

Email - panghalsuman7@gmail.com

शोध सार : व्यक्तित्व शब्द अपने आप में सारगर्भित है। जिसमें व्यक्ति के जीवन के मूर्त और अमूर्त रूप घनीभूत रूप में संयुक्त रहते हैं। हिंदी साहित्य में व्यक्तित्व अंग्रेजी के 'पर्सनैलिटी' शब्द के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। व्युत्पत्तिपरक दृष्टि से पर्सनैलिटी शब्द लैटिन शब्द "परसोना" से विकसित हुआ है। प्राचीन काल में नाटक या अभिनय के लिए लगाए जाने वाले नकली चेहरों के लिए 'परसोना' शब्द का प्रयोग किया जाता था। परंतु शीघ्र ही इसका अर्थ व्यक्ति विशेष से संबंधित हो गया। जो कालांतर में प्रयोग के पश्चात बाह्य आकार एवं विशुद्ध अंतर्मन के लिए भी प्रयुक्त होने लगा। शोधेय साहित्यकार 'उदयभानु हंस' का व्यक्तित्व फलक अतिविस्तृत व बहुवर्णा है। उनके व्यक्तित्व में ओज और तेज का, मृदुता और मधुरता का, सरलता और सहजता का असाधारण समायोग है। उनका साहित्यिक जीवन सतत साधना का परिणाम है। उन्होंने संघर्ष करके स्वयं के व्यक्तित्व का निर्माण किया है। वे आकर्षक,आत्मीयतापूर्ण और सिक्त व्यक्तित्व के स्वामी हैं।

बीज शब्द :व्यक्तित्व, सारगर्भित, घनीभूत, प्रतिक्रियात्मक, भाषाविदों, अतिविस्तृत, आत्मीयतापूर्ण।

1. शोध लेखः

हंस जी का जन्म 18 श्रावण 1983 विक्रमी संवत तदनुसार 2 अगस्त 1926 को वर्तमान पाकिस्तान में पंजाब प्रांत की तहसील अद्दू जिला मुजफ्फरगढ़ के गांव दायरा दीन पनाह में हुआ। महान मुस्लिम संत दीन पनहा की दरगाह होने के कारण यह गांव प्रसिद्ध है। यह गांव मुल्तान से लगभग 70 किलोमीटर दूर उत्तर पश्चिम में मुल्तान मियांवाली रेलवे लाइन पर स्थित है| इस गांव में हिंदुओं की जनसंख्या 10-12% से अधिक न थी। फिर भी विभाजन की क्रूर त्रासदी के समय इस गांव में सांप्रदायिक सद्भाव का वातावरण बना रहा था। उदयभानु हंस सारस्वत ब्राह्मण जाति से संबंध रखते हैं। 'हंस' प्रथम दृष्टया साहित्यकार का उपनाम प्रतीत होता है लेकिन उन्होंने अपनी आत्मकथा 'स्मृतियों के शिलालेख' में उधृत किया है कि यह उनकी उपजाति का प्रतीक है। हंस जी के दादा का नाम पंडित लच्छूलाल था व उनके पिता का नाम पंडित विश्वनाथ शर्मा व माता जी का नाम कृष्णा देवी था।

शिक्षा दीक्षाः हंस जी की प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण प्राकृतिक परिवेश में स्थित गांव के मिडिल स्कूल में हुई। स्कूल गांव से बाहर लगभग 1 किलोमीटर दूर स्थित था। शिक्षा का माध्यम उर्दू भाषा था तथा फारसी चौथी, पाँचवी कक्षा के बाद दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाई जाती थी। कृषि भी पाठ्यक्रम में एक अनिवार्य विषय होता था। हंस जी पढ़ाई में आरंभ से ही अग्रणी थे तथा कक्षा में मॉनिटर थे। खेलों में उनकी रुचि नहीं थी। सांस्कृतिक गतिविधियों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। अपने अध्यापक फकीर नूर से प्रोत्साहन पाकर हंस जी कविता, संगीत, नाटक आदि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने को उद्धत हुए। काव्य रचना की प्रथम प्रेरणा भी बाल कवि को वहीं से प्राप्त हुई। कुछ समय बाद अल्लाह

बख्श जैसे महान कवि के मार्गदर्शन से बाल कवि हंस ने मुशायरों में भाग लेना शुरू कर दिया। 1944 तक हंस जी फारसी मिश्रित उर्दू गजल लिखने में निपुण हो गए।

2. कार्यक्षेत्र:-1945 में पंडित देवराज शास्त्री के देहांत के पश्चात उदयभानु हंस को संस्कृत कॉलेज मुल्तान में उनके रिक्त स्थान पर नियुक्त किया गया। प्रथम स्वतंत्रता समारोह में हंस अपने ताया जी के साथ दिल्ली चले गए लेकिन देश में हिंसा भड़कने की वजह से वापस घर लौट आए। उनका शेष परिवार भी भारत लौट आया। हंस जी के कठिन प्रयासों से पहाड़गंज के एक प्राइवेट विद्यालय में उन्हें ₹20 मासिक वेतन पर अध्यापक की नौकरी मिली इन्हीं दिनों हंस के पिता ने प्रयत्नपूर्वक सनातन धर्म हाई स्कूल में नियुक्ति पत्र भेजा परंतु प्रोफेसर बनने का आदर्श स्वप्न देखने वाले हंस ने इस अवसर को ठुकरा दिया। उसके बाद उन्हें गांधी मेमोरियल कॉलेज में 8 घंटे पढ़ाने के ₹80 मिलने लगे| इस व्यवसाय के साथ-साथ उन्होंने प्रभाकर और बीए की कक्षाओं के परीक्षा उपयोगी भाषण अन्य संस्थाओं में देने आरंभ कर दिए थे। स्वकथ्यानुसार "भूखा क्या न करता, मैं दिन-रात काम में जुट गया। प्रतिदिन 8 घंटे परीक्षा उपयोगी भाषण देता, 4 घंटे कक्षाओं में पढ़ाता और शेष समय पुस्तके लिखता"।

3. मान सम्मानः-

1. संस्कृत लेखन में उत्कृष्टता हेतु "सप्ताहिक संस्कृतम् अयोध्या से 1943 में कवि भूषण तथा 1944 में साहित्य अलंकार की 2 मानक उपाधियों के प्रमाण पत्र।
2. दिल्ली में 1951 में बालकृष्ण शर्मा नवीन द्वारा प्रभाकर परीक्षार्थियों के विशाल समारोह में सम्मानित एवं अभिनंदन पत्र भेंट।
3. मार्च 1967 में हरियाणा सरकार द्वारा प्रथम राज्य कवि का दर्जा व सम्मान।
4. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 1968 में "संत सिपाही" कृति को प्रतियोगिता वर्ष की सर्वश्रेष्ठ कृति के आधार पर 'अखिल भारतीय गौरवशाली निराला पुरस्कार' का सम्मान।
5. श्री गुरु सभा द्वारा भी 1968 में संत सिपाही के लेखक को सिखों का सर्वोच्च सम्मान 'सरोपा' भेट।
6. हिंदी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए 1968 में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध साहित्यकार सेठ गोविंद दास द्वारा "गिरधर पुरस्कार" से सम्मानित।
7. 'हरियाणा दशक' नाम्ना राज्य स्तरीय समारोह, भिवानी में मुख्यमंत्री श्री बनारसी दास गुप्ता द्वारा 1976 में विशिष्ट सम्मान।
8. भाषा विभाग पंजाब द्वारा 'शंख और शहनाई' को वर्ष 1978 की सर्वश्रेष्ठ कृति चुने जाने पर प्रथम पुरस्कार।
9. हिंदी साहित्य 1999 में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के समारोह तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में सम्मानित।
10. वर्ष 2000 में महाराष्ट्र दलित अकादमी द्वारा 'प्रेमचंद लेखक पुरस्कार'।
11. वर्ष 2003 में हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा जगन्नाथपुरी में सर्वोच्च सम्मान 'साहित्य वाचस्पति ' की मानक उपाधि। .
12. सहस्त्राब्दी विश्व हिंदी सम्मेलन नई दिल्ली द्वारा 'सहस्त्राब्दी' सम्मान।
13. हरियाणा, पंजाब और हिमाचल प्रदेश के स्कूल शिक्षा बोर्डों तथा पंजाब एवं हरियाणा के पांचों विश्वविदयालय के पाठ्यक्रम में जीवन परिचय सहित रचनाएं निर्धारित ।
14. भारत सरकार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय संस्था केंद्रीय साहित्य अकादमी नई दिल्ली की महासभा तथा परामर्श मंडल की 5 वर्षीय सदस्यता का गौरव दो बार प्राप्त।
15. हरियाणा साहित्य अकादमी चंडीगढ़ की शासी परिषद की सदस्यता का चार बार सम्मान प्राप्त।

16. अखिल भारतीय साहित्य परिषद हरियाणा के प्रादेशिक अध्यक्ष तथा हरियाणा प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन के 7 वर्ष तक उप प्रधान।
17. 'हिंदी रुबाई' के रूप में नई काव्य धारा के प्रवर्तक होने का श्रेय तथा हरियाणा गौरवगाथा के रूप में हिंदी साहित्य को प्रथम वृत्त काव्य की ऐतिहासिक देन।
18. परिवार कल्याण विषय पर विशेष रूप से लिखित हरियाणवी गीत पर स्वास्थ्य सेवा विभाग हरियाणा सरकार दवारा एक लघु फिल्म "एक ही रास्ता" का निर्माण।
19. हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू के अनेक प्रमुख समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में व्यक्तित्व और कृतित्व पर विशिष्ट विद्वानों द्वारा लेख प्रकाशित।
20. 1981 तथा 1993 में दो बार इंग्लैंड यात्रा, 1993 में अमेरिका यात्रा के समय बीबीसी रेडियो और टेलीविजन, टी.वी. एशिया, सनराइज रेडियो लंदन तथा ए. एन. टी. वाशिंगटन पर कविता पाठ सहित साक्षात्कार प्रसारित। भारत में दूरदर्शन के दिल्ली और जालंधर तथा आकाशवाणी के दिल्ली, जालंधर, रोहतक, जम्मू केंद्रों से भी गोष्ठी, कवि सम्मेलन,परिचर्चा आदि का संचालन व प्रसारण।

4. हंस जी की व्यक्तिगत विशेषताएं:-

व्यक्ति हंस:-व्यक्ति के रूप में हंस को बाल्यकाल से अद्यतन प्रत्येक व्यक्ति का स्नेह प्राप्त हुआ है।बाल्यावस्था में माता-पिता, अध्यापक और बालसखा सभी के स्नेह का केंद्र दबुले-पतले गौरवर्ण,भोली सूरत, काली अचकन तथा चड़ीदार पायजामा पहने यह रमणीय बालक होता था। अर्ध शताब्दी से अधिक कालावधी व्यतीत हो जाने पर भी अद्यतन हंस रूप वही कोमल -कलित -मधुर अति मनोज्ञ- सहज- सजल- सर्वप्रिय प्रतीत होता है। उनके नाम शब्द समुच्चय के शब्द उदय और भानु में कोई अतंर दृष्टि गोचर नहीं होता। वह भानु होते हुए भी चद्रंमा की भांति शीतल और सौम्य हैं।

"उपलब्धि , सम्मान, पुरस्कार से दूर जिसका प्यारा- प्यारा व्यक्तित्व नीर
-क्षीर विवेक उड़ेलता, हंसता, गाता, रमता जोगी, पानी सा सहज है वह हंस।
यात्राओं की भीड़ से धलू भरा, पसीने से लथपथ सघंर्ष बहुल जिजीविषा के रक्त कमल-सा
मुस्कुराता है, हंसता है, हंसकर गले मिलता है वह हंस।"

उदारता:-साहित्यकार उदयभानुहंस का हृदय स्नेह, सौम्यता तथा उदारता का विशाल भंडार था। सबसे अच्छी बात यह है कि हंस जी एक अच्छे इंसान थे जितना विराट उनका बाह्य व्यक्तित्व है उतना ही आकर्षक , आत्मीयतापर्णू और उदार उनका अतंश्रतीण। प्रसिद्ध एवं प्रतिभा के राजकीय सम्मानजनित एवं भाव से सर्वथा अस्पृश्य रहे| जो भी व्यक्ति उनसे मिलने आता था उसका वे सहृदय अभिनदंन करते थे। हृदय के विचार वार्ता के माध्यम से निर्बाध और सांसारिक विलेपनों से विशुद्ध रूप में प्रभावित होते थे। उनका जीवन साधारण रूप में जीवन यापन करने वाले किसी ऋषि के समान था जो भी व्यक्ति उनसे एक बार मिलता था वह कुछ न कुछ नयापन, कुछ अपनत्व लेकर लौटता था।"वे बच्चों की तरह भोले, यवुकों की तरह कर्मठ एवं उत्साहित तथा वृद्धो की तरह गंभीर विचारक हैं |उनका अलीशा द्वेष विकार रहित जीवन सतं स्वभाव सब के प्रति सम्मान की भावना उनके उदार हृदय के परिचायक हैं। नका यही मानवतावादी, उदारवादी और व्यापक दृष्टिकोण उनकी निम्न पक्तिंयों से भी परिलक्षित होता है।

तुम स्वर्ग नहीं, भूमि का शृंगार करो।
सपनों को नहीं, सच को नमस्कार करो।
भगवान को दिन-रात रिझाने वालों,
भगवान के बंदो से भी कुछ प्यार करो।

माना दुख का अतं नहीं है,

सुख का मधुर बसतं नहीं है,
आपस में यह दर्द बांट लें,
वह हृदय का कम हो जाए,
हर आसूं शबनम बन जाए।

5. साहित्यिक व्यक्तित्व:-हरियाणा के राज्य कवि श्री उदय भानुहंस का साहित्य बहुआयामी है। उनका काव्य क्षेत्र तो शिखर छू ही रहा है, गद्य क्षेत्र में भी उन्होंने सुंदर, सार्थक और कई स्तरीय कृतियों की सजृना कर हिन्दी गद्य साहित्य को समृद्ध किया है। उनका गद्य साहित्य भी अपनी राष्ट्रीय चेतना, गौरवशाली अतीत का गुणगान तथा साहित्यिक परिक्षण की भावना से अनुप्राणित है। उनके लेखन में सूर्य की सी प्रखरता है, भाषा में भास्वरता है, चितंन में उदधि सा गांभीर्य हैं। वे एक सफल गद्य लेखक निबधंकार व समीक्षक हैं। उनमें सजृनात्मक और रचनात्मक प्रतिभा का सुंदर समन्वय हैं। एक लेखक के रूप में, गद्य लेखन में, हंस जी ने निम्न गद्य विधाओं का प्रयोग सफलतापूर्वक किया है:-

1. समीक्षा,:- हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार, 1950 बिहारी मिमांसा, 1995, बिहारी की काव्य कला, 1966, निबधं रत्नाकर, 1953 ,संस्कृति और समाज, 1998
2. काव्यशास्त्र:- साहित्य परिचय, 1952
3. साहित्य इतिहास :- हिन्दी नाटक का संक्षिप्त इतिहास, 1952, हिन्दी भाषा और साहित्य, 1995
4. यात्रा वर्तान्त:- हंस उड़ा पश्चिम की ओर, 1995
5. आत्मकथा:- स्मृतियों के शिलालेख,1998
6. शैक्षिक:- हंस हिन्दी व्याकरण तथा रचना, 1965

6. हंस कवि के रूप में:- साहित्यकार उदयभानुहंस एक कवि रूप में भी आधुनिक हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर थे। उनका स्थान 50 के बाद हिन्दी कविता में सप्रुसिद्ध और सम्मानित था। उनकी साहित्य यात्रा कवि रूप में भी विगत 6 दशकों की कालावधी से भी अधिक समय से निर्बाध रूप से गतिमान थी। उनमें तेज और ओज का, मदृता और मधुरता का, सरलता और सहजता का असाधारण समायोग है।'काव्याकाश में प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नवगीत ,साठोत्तरी कविता आदि अनेकानेक आन्दोलनों के नक्षत्र उदित-अस्त होते रहे लेकिन कभी हंस ने स्वयं को कमलपत्र की भांति निर्लिप्त रहते हुए अपना काव्य विशिष्ट रखा'। ख्याति प्राप्त कवियों में बहुत कम कवि ही ऐसे हैं जो परिनिष्ठित साहित्यिक कविता के साथ-साथ मंचीय कविता में भी स्थान बनाने में सफल रहे हैं।हंस जी ऐसे कवि थे जो साधारण तथा विशिष्ट वर्ग दोनों में एक समान प्रिय हैं।उनकी कविताएं विभिन्न विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में निर्धारित की गई हैं। उदयभानु हंस ने अपनी रचनाओं में कविता की विविध विधाओं का विनियोग किया है इसी तरह उन्होंने नाना भाव और नाना विचारों में पिरोया है। कवि हंस का सारस्वत प्रदेश अत्यतं अनपुम है।'महाकाव्य हो या वृत , गीत हो या ग़ज़ल, रुबाई मुक्तक हो या श्लोक सब में काव्य सर्जना करके हंस जी ने अपनी अकुंठ काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है।'

1. रुबाई :हिन्दी रुबाइयां(1952) कुछ कलियां- कुछ कांटे(1986)
2. मुक्तक:-हंस मुक्तावली (1998)
3. गीत:- धड़कन (1957) सरगम (1961) देशा में देश हरियाणा (1977) शंख और शहनाई (1976)
4. गजल:- अमृत कलश (1982)
5. महाकाव्य:- सतं सिपाही (1967)
6. वृत काव्य:- हरियाणा गौरव गाथा(1981)
7. दोहा:- दोहा सप्तशती (2004)

उदयभानुहंस जी वास्तव में बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं जिसमें उन्होंने कार्यक्षेत्र में ही नहीं बल्कि गद्य के क्षेत्र में भी श्रेष्ठ साहित्य की रचना की है। जिनका प्रति फलन उन्हें हरियाणा के सर्वप्रथम राज्य कवि के रूप में मिला है| काव्यशास्त्र में उन्हें हिन्दी का "रुबाई सम्राट" कहा जाता है। निष्कर्षत : हंस जी उर्दू ,संस्कृत, हिन्दी भाषा के निष्णात अध्येता एवं सृष्टा हैं।

सदंर्भ सूची:

1.इनसाइक्लोपीडिया ऑफ साइकोलॉजी एडिटेड बाय फिलिप लवेरनेहैरिमन, पेज 455
2.फर्स्ट यूजर अमंग एनसीएनट्ज ऑफ द मास्क इट्स ओन बिकम द नेम ऑफ इनविजिबल रोल, सेम पेज 455
3.दस द पर्सनऐर्लिटी केम टू मीन दा आउटवार्ड अपीयरेंस एंड आल्सो द विनर ऑफ साइक्लोजिकल एंडफिजियोलॉजिकल बाय होरेस,बी इंग्लिश ,1959
4.हिन्दी शब्द सागर, पृष्ठ 326
5.डॉ.रामसजन पांडे उदयभानुहंस की काव्य साधना, पृष्ठ 5
6.आचार्य क्षेमचद्रं सुमन विलक्षण काव्य मनीषी, पृष्ठ 30
7.उदयभानुहंस रचनावली, पृष्ठ 412
8.वही पृष्ठ, 391
9.वही, पृष्ठ 409
10.स्वकथन शोधार्थी शोधेय साक्षात्कार, 2 नवबंर 2002
11.संपादक डॉक्टर सत्य देव चौधरी काव्य सरोवर का हंस, पृष्ठ 246
12.वीरेंद्र मिश्र काव्य सरोवर का हंस राज हंस ध्वनि , पृष्ठ 37
13.विष्णुप्रभाकर काव्य सरोवर का हंस, पृष्ठ 29
14. डॉ बलबीर सिहं नरवाल उदयभानुहंस:संवेदना और शिल्प, पृष्ठ 29
15. उदयभानुहंस रचनावली भाग- 1 (हिन्दी रुबाइयां) पृष्ठ 78
16. उदयभानुहंस रचनावली भाग-1 (अमृत कलश) पृष्ठ 430
17. प्रोफेसर इंद्रनाथ मदान, काव्य सरोवर का हंस, पृष्ठ 47
18. डॉक्टर राम सजन पांडे, उदयभानुहंस की काव्य साधना, पृष्ठ 5